

जो शिक्षा प्रणाली लड़के- लड़कियों को सामाजिक बुराई या अन्याय के खिलाफ लड़ना नहीं सिखाती तो उस शिक्षा में जरूर कोई न कोई बुनियादी खराबी है।

-मुशी प्रेमचंद



हम गिनती के पांच लोग ही मेट्रो स्टेशन के बाहर सार्वजनिक वाहन का इंतजार कर रहे थे। लगातार बढ़ती धुंध में दृश्यता जीरो के आसपास थी। वहां बिल्कुल अकेले खड़े रहने की कल्पना बहुत भयानक होती, इसीलिए लोगों की उपस्थिति से मुझे कुछ तसल्ली मिल रही थी। मगर जितने भी लोग वहां थे, उनका पुरुष होना डरा रहा था।



कहानी

चंदना यादव

मीडिल मैम

वह सर्दियों की रात थी। मोबाइल में लिख रहे समय के अनुसार वक्त देर शाम से आगे बढ़ कर पहले पहर की रात में छल चुका था। मैं घर पहुंचने की बेचैनी में बार-बार समय देख रही थी। पंद्रह मिनट पहले घड़ी में दस बज गए थे। समय अब भी लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। महानगर की रोशनीयों से उग दूर होते ही डरावने अंधेरे घेरने लगते हैं। उस दिन अंधेरा पूरी दहशत के साथ मेरे आस-पास फैलाता हुआ महसूस हुआ। रात साढ़े दस बजे के करीब मैं अपनी निर्बल दिनचर्या से तीन की घंटे की देरी से मेट्रो से उतरी। गहराते कोहरे में सब सवारियों में अकेली महिला होने के कारण मैं कुछ ज्यादा ही आत्मविश्वास दिखा रही थी।

मेरे आगे-पीछे वाले मेट्रो के किसी कोच से एक बेफिक्र सा युवा भी उतरा। हम गिनती के पांच लोग ही मेट्रो स्टेशन के बाहर सार्वजनिक वाहन का इंतजार कर रहे थे। लगातार बढ़ती धुंध में दृश्यता जीरो के आसपास थी। उस समय मंडर कुछ अलग तरह का था। वहां बिल्कुल अकेले खड़े रहने की कल्पना बहुत भयानक होती इसीलिए लोगों की उपस्थिति से मुझे कुछ तसल्ली मिल रही थी। मगर जितने भी लोग वहां थे, उनका पुरुष होना डरा रहा था। सर्दी पूरे चरम पर थी इसीलिए इस समय वहां कोई आँटी नहीं था। मेट्रो

स्टेशन के बाहर मौजूद सभी पांच लोगों ने एक-दो बार संशय भरी नजरों से एक-दूसरे को देखा। इसी दौरान वह बेफिक्र सा युवा अचानक मेरे पास आ कर खड़ा हो गया। बिना कुछ बोले, वह मेरे साथ खड़ा रहा। कानों पर मोटे हैडफोन के आकार का ठंडक से बचने का इंतजाम लगाए वह कोई गीत गुनगुना रहा था। उसके गीत की धुन इससे पहले मैंने कभी नहीं सुनी थी।

सब सवारियों किसी वाहन का इंतजार कर रही थी कि उसी समय दूर से एक आँटी रिक्षा की आवाज अपनी ओर आती सुनाई दी। कुछ ही पलों में कोहरे के बीच से एक मध्यम से जलते बल्ब की अपनी ओर आते हुए पाया। आँटी ठीक से रुका भी नहीं था कि छः लोगों की सवारियों में चार लोग हड़बड़ी के साथ चढ़े, मानो देरी होने पर सीट नहीं मिलेगी। आँटी रिक्षा के रुकने पर जब मैं बैठने लगी, 'प्लीज सिट' उस बेफिक्र से युवा ने अपने साथ वाली सीट की ओर संकेत करते हुए कहा। पैतालिस वर्षों से यहां रहते हुए मैं इस शहर को कुछ-कुछ समझने लगी हूँ। कैडल मार्च करने वाला यह शहर अपने आसपास की महिलाओं की सुरक्षा से बेपरवाह रहता है। उस दिन भी यही हुआ।

वो सवारियों को उतारने के बाद उसी दिशा में मेरा घर था, मगर एक ग्रेड उम्र वाले साथी

सवार ने चालक को बाध्य कर दिया दूसरी दिशा के अपने पते पर चलने के लिए। कहने-सुनने का कोई अर्थ नहीं था, इन्स्टैंसिए मैं चुप रही। इसके बावजूद मेरे चेहरे पर परेशानी फैल गई। मेरी विवशता देख उस बेफिक्र युवा की आँखों में फिक्र के बादल उमड़ आए।

'मैम, आपको एड्रेस पर ट्राय करके घर जाएंगी।' अनायास ही उसने कहा।

'मैं अपने आप चली जाऊंगी। आप अपना एड्रेस बता दो, जिसका घर पहले आएगा, रिक्षा उधर ही पहले जाएगी।'

'मैम, आप मेरा मम्मा जैसा है। मैं ऐसा रात में मेरी मम्मा को अकेला नहीं छोड़ूँगी।' इस बार मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा, वह भारतीय नहीं था।

'तुम कहां से हो?'

'म्यांमार से मैम।'

'यहां कैसे आए?'

'काम से मैम।' उसके बोलने से लगा कि वह कहना चाहता था, मेरी उम्र से अंदाज लगा लो, यह काम करने की उम्र है, यहाँ करने आया हूँ।

'क्या करते हो?'

'अबो काम सीख रहा हो।' सड़क पर आती-जाती स्ट्रीट लाइट की रोशनी में मैंने उसकी आँखें देखीं, छोटी-छोटी रूई, मगर चिंदगी से लकरेज आँखें।

'मेरा अंकल एडमिट है यहाँ के हॉस्पिटल में।'

उसने बताया।

'क्या हुआ उन्हें?'

'हार्ट का प्रोब्लम है मैम। सर्जरी करना है। ट्रांसप्लांट करेगा दोस्तार।' धापाई भेद के बावजूद वह सही तरह से अपनी बात समझाना सीख गया था।

'कौन से हॉस्पिटल में है? उसने जो नाम बताया उससे मेरी उत्सुकता बढ़ गई।

'तुम म्यांमार से सीधे यहाँ कैसे पहुँचे? इंटरनेट पर सर्च किया था, इस हॉस्पिटल के बारे में या किसी ने यहाँ भेजा है?' मैंने फिर सवाल किया। 'बस मैम, मेरा कंट्री से सब इंडिया आते हैं इलाज के लिए।'

'क्या तुम्हें मेडिकल टूरिज्म के बारे में मालूम है?'

'बस।' उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया।

'तुम्हें पक्का पता है ना कि तुम्हारे अंकल को इसी इलाज की जरूरत है, कहीं दोनों देशों के लोग मिलकर तुम्हें बेवकूफ ना बना रहे हों।' 'अमारे कंट्री में पहले चेक करते हैं। वो रेफर करता है, तब इंडिया आते हैं।' उसने अपनी ओर से स्थिति को तस्वीर खींची। रिक्षा इस समय भी मेरे घर की विपरीत दिशा में दौड़ रहा था।

'मैम, आप कोई जाँच करते हैं?' वह पूछते हुए उसकी आवाज में शिष्टक नहीं थी।

'क्यों?' 'महानगरीय लोग सामने घटित हो रही घटना को नजर अंदाज करने और सवाल के बदले सवाल पूछने के आदी होते हैं। अब मैं भी महानगर हो गई हूँ, सोचना जाँच पड़ताल कि, कुछ भी कैसे बता देती।

'आपको पहले नहीं देखा। मेरी टाइम पर आता है कौन वारा।' उसने थड़ी देखते हुए कहा।

'तुम कब से हो यहाँ?'

'छ महीना से।'

'सर्जरी हो गई तुम्हारे अंकल की?'

'हो गए।'

'तुम वापस कब जाओगे?' इस बार आँटी मेरे घर की दिशा में जा रहा था।

'मेरा एक और अंकल का सर्जरी होने है। ये लोग रिटर्न जा रहे हैं, मैं यहीं रहेगा।'

'ये तुम्हारे अंकल है या तुम यही बिजनेस करते हो?' इस बार का वार, सुहार के हथौड़े वाला था।

'ये अंकल है, पर अब मैं यहीं रहेगा और काम सीखेगा।'

'क्या काम सीखने वाले हो?' मैंने पूछा।

'मिडिल मैम। मैं मिडिल मैम बनेगा।' उसने पूरे यक़ीन के साथ कहा।

शहरी संस्कृति बेदिल नहीं होती। जो अपना घर पीछे छोड़ कर अकेली महिला को उसके घर तक छोड़ने आए, उससे नंबर शीयर ना करें, यह नहीं हो सकता। मैं कुछ दिन थोड़ी सतर्क रही कि शायद वह बेवजह संदेश भेजेगा या फोन करेगा, मगर ऐसा नहीं हुआ। धीरे-धीरे यह किस्सा मेरी याददाश्त में रहा, मगर जीवन से खत्म हो गया। कोरोना के कारण बने जटिल हालात में जीवन घरों में कैद हो गया था। ऐसे में एक दिन अन्तरराष्ट्रीय अनजान नंबर से मुझे व्हाट्सअप संदेश मिला।

'वह मिडिल मैम क्या होता है?'

'देकी, अमरे मीडिल मैम और आपके देश वाले मीडिल मैम ने अमको ऑफिशन दिया कि इस टूरिज्म के लिए इंडिया के कौनसे हॉस्पिटल में इलाज करवाना है। एकचुली बताया कि ये बाले हॉस्पिटल टोक है, तो अम यहाँ आया।' उसने मुझे समझाया।

'इसमें तुम क्या सीखोगे?'

'मैम, मेरे कंट्री का मैं सब कुछ जानते हों। यहाँ रह कर आपके देश का स्कोर रहा है। थोड़ा टाइम में देकना मैम, मैं सब सीक जाएगा... खूब रूपीज कमाएगा मैम। बैक होम, फैमली को भेजेगा वो सारे रूपीज।'

'कितने लोगों का इलाज करवाओगे तुम?'

'मैम, मरना कौन चाहते हैं? सब जानते हैं कि मरना है, फिर भी मरना नहीं चाहते।' यह कहकर वह ठट्ठा कर हँसा और देर तक हँसता रहा।

'मैम, ओल्ड मैम भी लोन पर रूपीज ले कर इलाज करवाने दौड़ते हैं... कहीं भी दौड़ते हैं। अमारा लोग इंडिया आते हैं। मैं लाएगा उनकी इंडिया। मैं मिडिल मैम बनेगा।'

'मिडिल मैम क्या होते हैं? मैंने पूछा।

'मेडिकल डॉक्टर, मैं यहाँ बनेगा।' उसने कहा। 'तुम्हारी फैमिली में कौन-कौन है, रुपये किससे भेजोगे?'

'मेरे पेटेंट्स है मैम। अमरा फार्मिंग का लैंड है जेसे आपके देश में खेती ओता है, यहाँ भी ओता है।'

'बस...बस, रिक्षा रोकी, यहाँ है मेरा घर।'

'मैम, प्रोबलम नई है तो अपना नंबर शेयर करो?' उसने कहा।

शहरी संस्कृति बेदिल नहीं होती। जो अपना घर पीछे छोड़ कर अकेली महिला को उसके घर तक छोड़ने आए, उससे नंबर शीयर ना करें, यह नहीं हो सकता। मैं कुछ दिन थोड़ी सतर्क रही कि शायद वह बेवजह संदेश भेजेगा या फोन करेगा, मगर ऐसा नहीं हुआ। धीरे-धीरे यह किस्सा मेरी याददाश्त में रहा, मगर जीवन से खत्म हो गया। कोरोना के कारण बने जटिल हालात में जीवन घरों में कैद हो गया था। ऐसे में एक दिन अन्तरराष्ट्रीय अनजान नंबर से मुझे व्हाट्सअप संदेश मिला।

पीछे छोड़ कर अकेली महिला को उसके घर तक छोड़ने आए, उससे नंबर शीयर ना करें, यह नहीं हो सकता। मैं कुछ दिन थोड़ी सतर्क रही कि शायद वह बेवजह संदेश भेजेगा या फोन करेगा, मगर ऐसा नहीं हुआ। धीरे-धीरे यह किस्सा मेरी याददाश्त में रहा, मगर जीवन से खत्म हो गया। कोरोना के कारण बने जटिल हालात में जीवन घरों में कैद हो गया था। ऐसे में एक दिन अन्तरराष्ट्रीय अनजान नंबर से मुझे व्हाट्सअप संदेश मिला।

'मैम, मैं कॉल कर रहा हूँ, आप प्लीज फोन उठाए।' संदेश करने वाले की तस्वीर पहचानी सी लगी, परन्तु नाम वाद नहीं आ रहा था।

'हैलो मैम, मैं अली बोल रहा है म्यांमार से।' बस इतना ही परिचय चाहिए था। मुझे सदैव रात में फ़रिश्ते सा वह युवा याद आ गया।

'हैलो अली, कहां से आजकल?'

'मैम, मेरा मेटा एक्सप्रायर हो गया था, तब मैं अपने घर आया था फिर वह सब हो गया, फ्लाइट बंद हो गया। अब मेरे फ़ादर भी नहीं रहा मैम।'

'ओह, जानकर बहुत दुख हुआ बेटा।' इस बार भी बेटा संशोधन अंतर्गत से निकला था।

'मैम, जल्दी ये सब ठीक होने वाला है। फ्लाइट शुरू होते ही मैं इंडिया आ जाऊंगा। अब उतने पैसे की जरूरत नहीं है। यहाँ कोई नहीं बचा मेरा।

'मैम, मेरा मम्मा नहीं रहा, मे एक बार आपसे मिलना चाहता है, आ जाऊँ मैम?'

'हां, बेटा, हालात ठीक हो जाते हैं तब आना।' बात खत्म हो गई थी। चिचांचिचा मौसम एकाएक बदल गया... हर और ठंडी हवा बहने लगी।